Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

1. भारत में संविधान की दृष्टि से कौन-सा कथन सही है —

(अ) धर्म के आधार पर भेदभाव का अभाव
(ब) सनातन भारत का राजकीय धर्म है
(स) अल्पसंख्यकों को उनकी जनसंख्या के अनुरूप प्रतिनिधित्व
(द) ईसाइयों को विशेषाधिकार

2. दक्षिणी अफ्रीका में रंगभेद नीति कब से कब तक चली?

(अ) सन् 1940-1948
(ब) सन् 1948-1994 तक
(स) सन् 1968-1990
(द) सन् 1950-66

3. सन् 2001 की जनगणना के अंतर्गत भारत में कितना लिंगानुपात था?

(अ) 931
(ब) 930
(स) 933
(द) 925

4. सभी समाजों में कुछ सामाजिक असमानताएँ और —

(अ) विभिन्न जातियाँ मौजद होती हैं
(ब) एक जैसी जातियाँ मौजूद रहती हैं
(स) एक न एक तरह का श्रम का विभाजन मौजूद रहता है
(द) इनमें से को नहीं

5. एक पदानुक्रम जिसमें सभी जाति समूह उच्चतम से लेकर निम्नतम तक दिए गये हैं, उसे क्या कहते हैं?

(अ) सभी विकल्प सही हैं
(ब) जातिगत सीढ़ी
(स) व्यवसायिक चलन
(द) जातिगत पदानुक्रम

6. साम्प्रदायिक राजनीति इस सोच पर आधारित होती हैं।

(अ) धर्म ही सामाजिक समुदाय का निर्माण करता है
(ब) धर्म सामाजिक समुदाय का निर्माण नहीं करता
(स) विचार तथा आदर्श सामाजिक सम्प्रदाय का निर्माण करते हैं
(द) सभी विकल्प सही हैं।

7. यह शब्द किसके द्वारा कहे हैं " धर्म को कभी भी राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता।"

(अ) डॉ. भीम राव अम्बेडकर
(ब) महात्मा गाँधी
(स) पं. जवाहरलाल नेहरू
(द) कार्ल मार्क्स

8. समाज में व्याप्त असमानता का कौन-सा स्वरूप सभी जगह स्थित हैं?

(अ) संवेदनशीलता
(ब) लैंगिक असमानता का
(स) लैंगिक समानता
(द) ये सभी

मिशन ज्ञान
पढ़ें : जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

9. **धर्मनिरपेक्ष राज्य में —**

(अ) सभी धर्मों को समान समझना
(ब) केवल बहुसंख्यक वर्ग के धर्म को मान्यता
(स) धर्म का कोई स्थान नहीं
(द) एक राष्ट्र एक धर्म में विश्वास

10. **इनमें से कौन-सा विषय राज्य सूची के क्षेत्र में नहीं आता?**

(अ) न्याय
(ब) पुलिस
(स) जेल
(द) शिक्षा

रिक्त स्थान :

11. भारत में जनगणना _____ पश्चात् होती है।

12. _____ जैसे देशों में सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी का स्तर काफी ऊँचा हैं।

सत्य / असत्य

13. नारीवादी आंदोलन का उद्देश्य महिलाओं के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में बराबरी होना था।

14. उत्तराधिकार विवाह, तलाक इत्यादि से संबंधी कानून फौजदारी क्षेत्र में आते हैं।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. लैंगिक विभाजन किस पर आधारित है?

16. लिंगानुपात किस कहते हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. अनुसूचित जातियाँ और अनुसूचित जनजातियों की विशेषताएँ लिखिए। देश की आबादी में उनके प्रतिशत क्या हैं?

18. साम्प्रदायिकता क्या है? यह भारत के लिए चुनौती क्यों है?

निबंधात्मक प्रश्न

19. भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता से संबंधित कुछ प्रावधान किए गए हैं। उनमें से प्रमुख का वर्णन कीजिए।

20. नारीवाद आन्दोलन किसे कहते हैं? इनके क्या प्रभाव हो रहे हैं?

HOTS

21. घर के अन्दर तथा घर के बाहर में भेद कर श्रम का लैंगिक विभाजन किया जाता है। परन्तु ऐसे घर के कुछ काम पुरुष बाहर क्यों करते हैं?

मिशन ज्ञान
जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

Under CSR Support by
ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

1. (अ) धर्म के आधार पर भेदभाव का अभाव।
2. (ब) दक्षिणी अफ्रीका में सन् 1948-1994 ई० तक बहुसंख्यक अश्वेतों को सत्ता से दूर रखने के लिए रंगभेद नीति बनाई गई थी।
3. (स) भारत में सन् 2001 ने 1000 लड़कों पर 933 लड़कियों का अनुपात था।
4. (स) सभी समाजों में कुछ सामाजिक असमानताएँ और एक न एक तरह का श्रम का विभाजन मौजूद रहता है।
5. (द) उसे जातिगत पदानुक्रम कहते हैं।
6. (अ) साम्प्रदायिक राजनीति में धर्म ही सामाजिक समुदाय का निर्माण करता है।
7. (ब) "धर्म को कभी भी राजनीतिक से अलग नहीं किया जा सकता।" यह शब्द महात्मा गाँधी द्वारा किये गए।
8. (ब) सामाजिक असमानता को लैंगिक असमानता के रूप में प्रत्येक स्थान पर देखा जा सकता है।
9. (अ) सभी धर्मों को समान समझना
10. (द) जाति व्यवस्था के कुछ पुराने पहलू अभी भी बरकरार हैं।
11. **रिक्त स्थान :** 10 वर्ष
12. **रिक्त स्थान :** स्वीडन, नार्वे तथा फिनलैंड
13. **सत्य / असत्य :** सत्य
14. **सत्य / असत्य :** असत्य
15. सामाजिक अपेक्षाओं।
16. लिंगानुपात का अभिप्राय: प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या।
17. अनुसूचित जातियाँ और अनुसूचित जनजातियों की विशेषताएँ —

1. **अनुसूचित जातियाँ :** वे जातियाँ जो हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में उच्च जातियों से अलग और अछूत मानी जाती हैं। जो दलित के रूप में मानी जाती हैं तथा जिनका अपेक्षित विकास नहीं हुआ है।
2. **अनुसूचित जनजातियाँ :** ऐसा समुदाय जो साधारणतया पहाड़ी और जंगली क्षेत्रों में रहते हैं और जिनका बाकी समाज से अधिक मेलजोल नहीं है। साथ ही उनका विकास नहीं हुआ है।

देश की आबादी में उनके प्रतिशत —

1. अनुसूचित जातियों का प्रतिशत: 16.2 प्रतिशत तथा
2. अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशत: 8.2 प्रतिशत है।

18. धर्म को राजनीति के साथ जोड़ना साम्प्रदायिकता कहलाता है। जब कोई एक धार्मिक समूह अपनी माँगों के लिए धर्म का सहारा लेता है तथा उस धर्म के नेता धार्मिक भावनाओं को उकसाते हैं, तो इसे धार्मिक साम्प्रदायिकता कहा जाता है।

साम्प्रदायिकता भारत के लिए चुनौती —

i. भारत जैसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक बहुलतावाले देश में साम्प्रदायिकता का विकास कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि अंग्रेजों द्वारा साम्राज्यवादी और औपनिवेशिक हितों की पूर्ति के लिए "बांटो और राज करो" नीति के तहत एक क्रमिक प्रक्रिया थी।

ii. साम्प्रदायिकता भारत के न केवल कुछ लोगों के लिए बल्कि सारे देश, सामाजिक व्यवस्था और कानून तथा व्यवस्था के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। यह भारत की बुनियादी अवधारणा के लिए एक चुनौती है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। हमें अपने दैनिक जीवन में साम्प्रदायिक दुष्प्रचारों का खण्डन करना होगा तथा धर्म पर आधारित गोलबन्दी का मुकाबला राजनीति के दायरे में करने की जरूरत है।

19. धर्मनिरपेक्ष शब्द, भारतीय संविधान की प्रस्तावना में बयालीसवें संशोधन (1976) द्वारा डाला गया था। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ किसी के धर्म का विरोध करना नहीं है बल्कि सभी को अपने धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं को पूरी आजादी से मानने की छूट देता है।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

भारतीय संविधान में धर्म निरपेक्षता से सम्बन्धित प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रावधान किए गए हैं जिनमें से कुछ का वर्णन इस प्रकार है:-

i. भारतीय संविधान में किसी एक धर्म को नहीं अपनाया है। श्रीलंका में बौद्ध धर्म, पाकिस्तान में इस्लाम तथा इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म को अपनाया गया है जबकि भारत में ऐसा कुछ नहीं है।

ii. संविधान में सभी नागरिकों को कोई भी धर्म अपनाने और उसका प्रचार करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है।

iii. संविधान धर्म के आधार पर किए जाने वाले किसी भी प्रकार के भेदभाव को अवैधानिक घोषित करता है।

iv. संविधान धार्मिक समुदायों में समानता सुनिश्चित करने के लिए शासन को धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार देता है।

20. नारीवादी आंदोलन : महिलाओं के राजीतिक और वैधानिक दर्जे को ऊँचा उठाने, उनके लिए शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने की माँग और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने की माँग करने और उनके व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन में बराबरी की माँग करने वाले आंदोलन को नारीवादी आंदोलन कहते हैं।

इनके प्रभाव —

i. यह आंदोलन महिलाओं के राजनैतिक अधिकार और सत्ता पर उनकी पकड़ की वकालत करता है।

ii. महिलाओं की शिक्षा तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में उनके व्यवसाय, सेवा आदि का समर्थक है।

iii. यह महिलाओं के हर प्रकार के शोषण का विरोध करता है।

iv. इसमें महिलाओं को घर की चार-दीवारी के भीतर कैद रखने और घर के सभी कर्मों का बोझ डालने का विरोध सम्मिलित है।

v. यह पितृसत्तात्मक परिवार को मातृसत्तात्मक बनाने की ओर अग्रसर है।

vi. यह महिला सशक्तिकरण ओर अग्रसर है।

vii. यह महिलाओ को पूर्णतः आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम है।

21. लैंगिक विभाजन- लिंग के आधार पर अलग अलग कार्यों का विभाजन लैंगिक विभाजन कहलाता है, इस व्यवस्था में सभी घरेलू कार्य स्त्रियों के द्वारा किये जाते है एवं पैसे कमाने का कार्य पुरुषों को दिया जाता है।

i. महिलाओं को प्रायः घर के काम तथा पुरुषों को प्रायः बाहर के काम देकर श्रम का लैंगिक विभाजन किया जाता है। परन्तु जब पुरुषों को ऐसे काम बाहर करने पड़ते है। तो वे पैसों के लिए उन्हें खुशी से करते हैं।

ii. अधिकतर होटलों के अन्दर रसोइए पुरुष होते हैं। पैसे के लिए कपड़े की सिलाई करने का काम भी पुरुष बाहर खूब करते हैं। इसी प्रकार औरते भी घर के बाहर का काम खूब करती हैं।

iii. गाँवों में महिलाएँ पानी और ईंधन की व्यवस्था करने से लेकर खेत में फसल काटने तक का काम करती हैं। शहरों में गरीब स्त्री किसी मध्यवर्गीय परिवार में नौकरानी का काम कर रही है और मध्यवर्गीय स्त्री काम करने के लिए किसी स्कूल, कॉलेज या दफ्तर में जाती हैं। सच्चाई यह है कि अधिकतर महिलाएँ अपने घर के काम के अतिरिक्त अपनी आय बढ़ाने के लिए कुछ न कुछ काम अवश्य करती हैं। परन्तु उनके काम को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता और उन्हें दिन-रात काम करने का श्रेय भी नहीं मिलता।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें जहां चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App